वर्ष–2

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक 4

माह अक्टूबर 2005 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

सै. कल्बे जवाद प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपरइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया।

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

अक़्वाले मासूमीन

६ रसूले अकरम (स0) ने फ़रमाया अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक शाइस्ता तरीन शख़्स वह है जो इब्तेदा सलाम से करे।

६ अमीरुलमोमिनीन इमाम अली (अ0) ने फ़रमाया गुस्सा न करो और दूसरों को भी गुस्सा न दिलाओ। एक दूसरे के अलानिया सालाम कहो, ख़ुशख़लक़ी से गुफ़्तगू करो और नमाज़े शब पढ़ों ताकि जन्नत और हमेशा रहने वाली नेक बख़्ती हासिल कर सको।

□ रसूले अकरम (स0) ने फ़रमाया लोगों में सबसे ज़ियादा बख़ील वह शख़्स है जो सलाम करने में बुख़्ल करे।

''वमिन कुल्लि शैइन ख़लक़्ना ज़ौजैनि लअल्लकुम तज़क्करून''

(अज़्ज़ारियात आयत–49)

काएनात में 'शादी' करने का दस्तूर

हुज्जतुल इस्लाम हुसैन अन्सारियान
अनुवादक : मु0 र0 आबिद

कोई भी जानवर किसी भी दूसरी तरह (Species) के जानवर की ओर मिलान नहीं करता जबकि वह भी जानवर ही होता है और उसमें भी सेक्स होता है। उनमें कोई भी नर अपने सेक्स को नापाकी और ग़लतकारी से गन्दा नहीं करता वे सेक्स के बारें में भटकते नहीं हैं।

नर जानवर का नुतफ़ा (या वीर्य / Sperm) उसी मादा के लिए है जो उससे ख़ास है। इस सिलसिले में वह दूसरे (की मादा) की ओर देखता भी नहीं। वह एक दूसरे को ग़लत निगाह से देखते भी नहीं। अपनी मादा को छोड़ दूसरे की मादा पर हाथ साफ़ नहीं करते। इस बारे में अण्डे वाले और छाती या थन वाले (Mammal) जानवरों में कोई फ़र्क़ नहीं होता।

चरने वाले, उड़ने वाले, धरती पर रेंगने वाले और पानी वाले जानवरों की ज़िन्दगी के सारे मुद्दे ख़ासकर नस्ल बढ़ाने के सिलसिले में जो संयम–नियम (Discipline) पाया जाता है वह समझदारों के लिए हैरत से भरपूर है। जिन क़ानूनों और हालतों में जानवर ज़िन्दगी बिताते हैं वह उन लोगों के लिए नसीहत के सबक़ है जो सचाई के रास्ते से दूर हो गये हैं और ज़िन्दगी की अस्लियत और चमक गवां बैठे हैं। जानवरों के बीच ऐसा ही सूत्रपात और बन्धन है जैसा सूरज, चाँद, ज़मीन, आसमान और पेड़–पौधों, मिट्टी–पत्थर (बेजान) के बीच है।

इन्सान और शादी–बियाह

जानवरों, पेड़–पौधों और मिट्टी–पत्थर (बेजान चीज़ों) में जोड़े बनाना, बच्चे होना और नस्ल बढ़ना, यह सब प्रकृति के (ख़ुदाई) क़ानूनों की बुनियाद पर और मनोवृत्ति या अस्लियत के सही रास्ता पकड़ने से होता है। लेकिन इन्सानों में ज़िन्दगी के इस मसले और प्रकृति के इस मन्सूबे (Plan) का शरीयत (मज़हब के क़ानून) के तय की गयी हदों में और उन ख़ुदाई क़ानूनों के आधार पर होना चाहिए जो क़ुर्आन मजीद में और नबियों, इमामों की हदीसों (पाक कथनों) में बताये गये हैं।

इस सचाई की शुरुआत ख़ुदा के इरादे के साये में चाह, दोस्ती, प्यार और मर्द औरत के बीच नरमी से होती है :–

''और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारा जोड़ा तुम्ही में से पैदा किया ताकि तुम्हें चैन मिले और फिर तुम्हारे बीच मुहब्बत और दया रख दी। इसमें उन लोगों के

लिए निशानियाँ हैं जो सोचते समझते हैं।''

(कुर्आन मजीद)

''और ख़ुदा वह है जिसने आदमी को पानी से पैदा किया और फिर उसे ख़ानदान और ससुराल वाला बना दिया और आपका पालने वाला (ख़ुदा) बहुत सकत (सामर्थ्य) रखने वाला है।''
(कुर्आन मजीद)

शादी करना खुद ही इस्लाम में मुस्तहब (वह काम जिसके करने में सवाब और न करने में अज़ाब न हो।) और चहीता काम है। लेकिन यह उस हालत में है जब बिना शादी के रहने से पाप–गुनाह में पड़ जाने का अन्देशा न हो और ग़लत बेहूदे कामों में घिर जाने का डर न हो, वरना शादी करना वाजिब (ज़रूरी – जिसके करने में सवाब और न करने में अज़ाब हो) है। इस हालत में शादी के बारे में ख़ुदा के हुक्म का दिल व जान से पालन करें और आने वाले समय में होने वाले ख़र्चों का डर मन में न लाएँ क्यों कि आने वाले समय में ज़िन्दगी बिताने के बारे में डरे–सहमे रहना, शैतानी काम है। इससे मन कमज़ोर होता है और यह दुनिया चलाने वाले (ख़ुदा) पर भरोसा न होने का कारण है।

'नूर' के सूरे में एक आयत में ख़ुदा शादी करने का हुक्म और ख़र्चे पूरे करने की ज़मानत को इस तरह बयान करता है :–

''अपनी कुँवारी लड़कियों, लौंडियों (दासियों) और अपने नेक गुलामों (दासों) का निकाह कर दो और उनकी शादी का सामान कर दो, इस तरह अगर वे ग़रीब हैं तो ख़ुदा अपने फ़ज़्ल (दया) से उन्हें मालामाल कर देगा, और ख़ुदा (बड़ा) फ़ैलाव वाला और जानने वाला है।''

कुर्आन मजीद में यहाँ जो अरबी का शब्द आया है वह अरबी व्याकरण से लोट–लकार (आज्ञा/आदेश देने वाला) है जिससे समाज का कोई भी एक (आदमी) छूटा नहीं है यानी औरत मर्द सब पर यह हुक्म लागू होता है।

जिन लोगों को शादी की ज़रूरत है यह आयत उनके लिए शादी को वाजिब कर देती है। चूँकि इसके बग़ैर वह चाल–चलन के पाक नहीं रह सकते। एक लिहाज़ से यह बात समझ में आती है कि ख़ानदान वालों, ख़ासकर माँ–बाप और मालदारों को चाहिए कि वे लड़के–लड़कियों की शादी के सिलसिले में अगुवाई करें।

(जारी)

इस्लाम में बीवी और शौहर के हुक़ूक़

हुज्जतुल इस्लाम मोलाना मो0 सुहफी साहब
अनुवादक सै0 सुफ़यान अहमद नदवी

साद बिन माज़, रसूले अकरम (स0) के एक वफ़ादार साथी थे जिन पर हुजूर (स0) ख़ास ध्यान देते थे। जब वह फ़ौत हुए तो आँहज़रत (स0) ने उनकी कफन–दफन की रुसूम अन्जाम देने में ख़ुद शिरकत की और फ़रमाया कि फरिश्ते भी साद के जनाज़े की जमाअत में शामिल हुए हैं।

रसूले अकरम (स0) ने उनकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और जब उन्हें क़ब्र में उतारा गया तो आँहज़रत (स0) क़ब्र में दख़िल हुए। अपने मुबारक हाथों से क़ब्र को ठीक किया। ईंटों के दरमियान जो छेद थे उन्हें मुकम्मल तौर पर बन्द किया और फिर सहाब–ए–किराम से फरमाया : ''अगरचे मुझे इल्म है कि यह क़ब्र जल्द ही टूट–फूट जाएगी लेकिन अल्लाह तआला इस बात को पसन्द फरमाता है कि जब उसके बन्दे कोई काम अन्जाम दें तो उसे पक्का और ठीक–ठीक अन्जाम दें।''

क़ब्र पर मिट्टी डाल दी गयी और उसे ज़मीन के साथ हमवार कर दिया गया। जब साद की माँ ने जो दफनाने के शुरु से आख़िर तक मौजूद थीं अपने बेटे के बारे में रसूले अकरम (स0) का ख़ास ध्यान देखा तो बेइख़्तियार कहने लगीं : ''ऐ मेरे बेटे! तुझे जन्नत मुबारक हो!''

रसूले अकरम (स0) ने उस औरत से फरमाया : ''ख़ामोश रह! तू अल्लाह से क्या उम्मीद रखती है? अभी–अभी क़ब्र ने साद को बड़ी सख़्ती से भींचा है।''

उसने पूछा : ''या रसूलुल्लाह (स0)! ऐसा क्यों हुआ?''

आपने फरमाया : ''इसलिए कि साद घर में अपनी बीवी से बद अख़लाक़ी से पेश आता था।''

(तबक़ात इब्ने साद जिल्द–3)

इमाम सादिक़ (अ0) फरमाते हैं : उस मर्द पर अल्लाह की रहमत हो जो अपनी बीवी के साथ अपने ताल्लुक़ात की बुनियाद एहसान और नेकी पर रखे।''

(मन ला यहजुरुहुल फ़क़ीह जिल्द–2 पेज–142)

रसूलुल्लाह ने फरमाया : ''तुम में बेहतरीन मर्द वह है जो अपने ख़ानदान वालों के साथ ज़ियादा अच्छा सुलूक करता हो और मैं तुम सबके मुक़ाबले में अपने ख़ानदान वालों से बेहतर सुलूक करता हूँ।''(वसाएलुश्शीआ जिल्द–7 पेज–122)

रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया : जो शख़्स अपनी बीवी बच्चों के हुक़ूक़ को बर्बाद करे वह लानत और नफरत का मुस्तहक़ है।''

(वसाएलुश्शीआ जिल्द–7 पेज–122)

ज़ाहिर है कि इस्लाम में जैसे मर्दों को ताकीद की गयी है कि अपनी बीवियों के साथ अच्छा सुलूक करें उसी तरह बीवियों से भी कहा गया है कि शौहरों के बारे में अपनी ज़िम्मेदारियाँ पूरी करें और अपने आपको लायक़ बीवियाँ साबित करें।

इमाम मूसा काज़िम (अ0) ने फरमाया : ''औरतों का जिहाद यह है कि अच्छी बीवियाँ साबित हों।'' (अलकाफ़ी जिल्द–2 पेज–60)

अपनी शादी के शुरुआती दिनों में इमाम अली (अ0) अपनी पाक बीवी हज़रत फातिमा (स0) दोनों मिलकर रसूले अकरम (स0) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि हम में से हर एक की ज़िम्मेदारियों की हदें मुतअय्यन फरमा दीजिये। आँहज़रत ने बाहर के तमाम काम इमाम अली (अ0) के ज़िम्मे फरमा दिये और हज़रत फातिमा (स0) को घर के तमाम काम–काज का ज़िम्मेदार क़रार दिया।

(कुरबुल असनाद पेज–25)

मर्द और औरतें सही और आक़िलाना तौर पर ख़ुश बख़्ती की ज़िन्दगी की बुनियाद रख सकते हैं और जो काम उनकी सुकून भरी ज़िन्दगी के लिए नुक़सानदेह हों उनसे दूर रह सकते हैं। बाज़ औक़ात मामूली और ग़ैर अहम काम प्यार और मुहब्बत में बढ़ोत्तरी की वजह बन सकते हैं और इसी तरह कभी बिलकुल मामूली बातें झगड़ा और जुदाई पैदा कर सकती हैं।

रसूले अकरम (स0) ने फरमाया है : ''मुनासिब यह है कि औरत घर का चिराग़ रौशन करे और खाना तैयार करे और जब उसका शौहर घर आए तो घर के दरवाज़े के पास जाकर उसका इस्तेक़बाल करे और उसे ख़ुश आमदीद कहे और पानी और तौलिया लाकर शौहर के हाथ धोने में उसकी मदद करे और बिना वजह उसकी ख़्वाहिशें पूरी करने से इनकार न करे।''

(मुस्तदरकुल वसाएल बाब मुक़द्दमातुन निकाह)

रसूलुल्लाह ने इरशाद फरमाया : ''जो मर्द किसी औरत से शादी करे उसे चाहिए कि उसका एहतेराम करने और उसे अज़ीज़ रखने की कोशिश करे।'' (मुस्तदरकुल वसाएल बाब मुक़द्दमातुन निकाह)

बीवी की ग़लती का ज़िक्र बच्चों के सामने न करो अगर तुम्हारे बच्चे अपनी माँ की ग़लती का ज़िक्र करें तो तुम्हें बच्चों के दिमाग़ से इस बारे में सुकून दिलाना चाहिए और उनके दिलों में माँ का एहतेराम क़ायम करना चाहिए। और माँ का भी यह फ़र्ज़ है कि हमेशा बच्चों को बाप का एहतेराम करने की तलक़ीन करे।

औरत और मर्द दोनों का फ़र्ज़ है कि अपने आपको एक–दूसरे के सामने बावक़ार और पुरकशिश बनाकर पेश करें और गन्दगी और नापसन्दीदा हालत में रहने से परहेज़ करें।

हसन बिन जहम कहता है कि मैंने एक बार देखा कि इमाम मूसा काज़िम (अ0) ने ख़िज़ाब लगा रखा है। मैंने हैरान होकर इसकी वजह पूछी तो आपने जवाब में फरमाया : ''मर्द का अपने चेहरे–मोहरे और लिबास को सजाना औरत की इज़्ज़त को बढ़ाता है। (क्योंकि अगर औरत अपने शौहर में दिलचस्पी ले तो फिर वह दूसरे मर्दों की तरफ नहीं देखती) बहुत सी औरतें अपने शौहरों का ध्यान और दिलचस्पी न होने की वजह से बुरे किरदार वाली हो जाती हैं।''

फिर आपने फरमाया : ''क्या तुम इस बात को पसन्द करते हो कि अपनी बीवी को बेजान व परेशान हाल देखो?''

मैंने जवाब दिया : ''नहीं।''

इस पर आपने फरमाया : ''वह भी तुम्हारी तरह ही है और इस बात को पसन्द नहीं करती कि उसका शौहर गन्दा रहे और परेशान हाल

हो। बिला शुब्हा पाकीज़गी, ख़ुश्बू लगाना और सर और चेहरे को ठीक हालत में रखना अम्बियाए किराम (अ0) के अख़लाक़ में से है।

एक ख़लीफा के हुकूमत के ज़माने में एक औरत ने ख़लीफा के पास अपने शौहर के ख़िलाफ शिकायत की और तक़ाज़ा किया कि उसके शौहर को हाज़िर करके उसे उस से तलाक़ दिलायी जाए।

ख़लीफा ने वजह पूछी तो औरत ने जवाब दिया : ''मैं अपने शौहर को पसन्द नहीं करती और मुझे उसके साथ ज़िन्दगी गुज़ारना नापसन्द है।''

ख़लीफा औरत की मायूसी की वजह मालूम करना चाहता था चुनानचे उसने मुख़तलिफ तरीक़ों से मामले की छान–बीन की। इस बारे में उनके बीच इस तरह बात–चीत हुई :

ख़लीफा : क्या तुम्हारा शौहर तुम्हारे ज़िन्दगी के ख़र्चे अदा करने में कमी करता है?

औरत : नहीं।

ख़लीफा : क्या वह तुम्हें मारता पीटता और तकलीफ देता है?

औरत : नहीं।

ख़लीफा : क्या वह तुमसे अलग रहता है?

औरत : नहीं। इनमें से कोई बात नहीं है। मेरा शौहर एक अच्छा आदमी है लेकिन मुझे पसन्द नहीं है।

ख़लीफा ने उस औरत के शौहर को हाज़िर करने का हुक्म दिया। कुछ देर गुज़रने पर सरकारी आदमी एक शख़्स को ख़लीफा की ख़िदमत में ले आए जो बेहद गन्दा और परेशान हाल था। उसके बाल बिखरे और उलझे हुए थे, नाखुन बढ़े हुए थे और कपड़े–फटे पुराने थे।

ख़लीफा ने इस पर भी बहस की ताकि सवालात और जवाबात से औरत की मायूसी की वजह से पता चलाया जा सके लेकिन कोई वजह समझ में न आ सकी। फिर ख़लीफा को ख़याल आया कि शायद औरत की बेज़ारी की वजह उसके शौहर की यही परेशान हाली हो। इसलिए उसने औरत को हुक्म दिया कि आज तुम वापस जाओ और कल अपने शौहर के साथ तलाक़ जारी करने के लिए यहाँ आ जाओ।

औरत चली गयी। उसके जाने के बाद ख़लीफा ने अपने मुलाज़मीन को हुक्म दिया कि उसके शौहर को हम्माम में ले जाएँ और उसके सर और चेहरे का सुधार कराएँ और उसे साफ–सुथरे कपड़े पहनाएँ। इस काम से फ़ारिग़ होने के बाद उसे भी रुख़सत कर दिया गया और हुक्म दिया कि कल सुब्ह अपनी बीवी के साथ यहाँ हाज़िर हो जाओ।

दूसरे दिन ख़लीफा ने काफी इन्तिज़ार किया, लेकिन उनमें से कोई भी न आया। उसने किसी को भेजा ताकि उन्हें हाज़िर किया जाए। जब वह आए तो ख़लीफा ने औरत से कहा कि अब हम तुम्हारी तलाक़ जारी करने के लिए तैयार हैं।

औरत ने बेचेनी के साथ घबराकर कहा : ''नही! अब मैं अपने शौहर से जुदा होने पर हरगिज़ तैयार नहीं हूँ। मैं उसे चाहती हूँ और जो कुछ कल कह चुकी हूँ उस पर शर्मिन्दा हूँ।''

ख़लीफा हंसा और उन्हें प्यार और मुहब्बत

से ज़िन्दगी गुज़ारने की नसीहत की।

ख़लीफा की सोच ठीक थी क्योंकि यह मुमकिन है कि औरत या मर्द की परेशान हाली, मायूसी और नफरत यहाँ तक कि तलाक़ और जुदाई को वाजिब कर दे।

इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ0) फरमाते हैं : ''औरत को अपने शौहर की ख़ातिर ज़ेवर के बग़ैर नहीं रहना चाहिए चाहे वह गर्दन में हार ही पहन ले।'' (अलकाफ़ी जिल्द–2 पेज–61)

अगर औरत इन मसाएल की तरफ ध्यान दे जो बज़ाहिर बे अहम्मियत नज़र आते हैं और अपने बनाव सिंगार और घर के मामले सुलझाने का एहतेमाम करे तो वह अलग रहने वाले और मायूस शौहर को अपने आप में और घर के मामलात में दिलचस्पी लेने पर माएल कर सकती है और घर की फिज़ा को ख़ुलूस और मुहब्बत से भर सकती है।

डेल कारनेगी कहता है : ''जब घर सजा हुआ होगा और कमरे ऐसे सलीक़े से सजाए गये हों कि मकान को पसन्दीदा बना दें और औरत घर में शौहर की मौजूदगी पर ख़ुशी का इज़हार करे तो शौहर इधर–उधर दूसरों के पास भटकने के बजाए सीधा अपने घर आता है इसकी वजह यह है कि पहले तो शौहर फ़ख्र महसूस करता है कि उसकी हालत इतनी अच्छी है और बाद में वह घर से मानूस हो जाता है। शौहर को घर में आज़ाद छोड़ देना चाहिए। उसका जहाँ जी चाहे बैठे, जो जी चाहे खाए, अपना सिगार और रोज़नामा जहाँ जी चाहे रखे और आख़िरकार उसे घर में मुकम्मल आराम हासिल हो।''

ख़ुशी और सुकून ऐसी चीज़ें नहीं जिन्हें बाज़ार से ख़रीदा जा सके बल्कि उन्हें फक़त शौहर और बीवी के नेक अख़लाक़, तौर–तरीक़ों और बात–चीत से ही हासिल किया जा सकता है।

इमाम सज्जाद (अ0) ने फरमाया है : ''अच्छी बातें इन्सान की दौलत और रोज़ी को बढ़ाती हैं। उसकी उम्र को लम्बा करती हैं। बीवी और औलाद के दरमियान मुहब्बत की वजह बनती हैं और इंसान को जन्नत में पहुँचाती हैं।''

(अज़्ज़वाजु फ़िल इस्लाम पेज–198)

शौहर और बीवी की ज़िम्मेदारियों के बारे में मग़रिब के दानिश्वरों ने कई एक बयानात दिये हैं जिनके नज़रिये की तरफ हम इशारा करते हैं लेकिन इस नुक्ते का ज़िक्र कर देना ज़रूरी है कि इस्लामी अहकाम और दानिश्मन्दों के दरमियान फ़र्क़ है और वहयह कि इस्लामी अहकाम का सरचश्मा अल्लाह का पैग़ाम है जो हर क़िस्म की ग़लती और कमी से पाक है जबकि दानिश्मन्दों के ख़यालात जो तजर्बे वग़ैरा से हासिल किये गए हैं शक–शुब्हे से ख़ाली नहीं हैं और यही वजह है कि अकसर मसाएल के बारे में ख़ुद उनके बीच बहुत से इख़्तेलाफात मौजूद हैं। इसके अलावा हर रोज़ पिछले दानिश्मन्दों के ख़यालात रद कर दिये जाते हैं और नये ख़यालात उनकी जगह ले लेते हैं लेकिन इस्लाम के अहकाम चौदह सौ साल गुज़र जाने के बाद भी पूरी तरह अपनी ताक़त और एतबार के बल–बूते पर बाक़ी हैं और इस ज़माने के दानिश्मन्द भी उनकी ताईद करते है।

(जारी)

ग़ैर इस्लामी तवह्हुमात व रस्मो रवाज में जकड़ा हुआ हमारा मुआशरा

मोहतरमा अन्दलीब ज़हरा कामुनपुरी साहेबा
अनुवादक : क़ायम महदी नक़वी तज़हीब नगरौरी

रसमो रवाज ने हमारी ज़िन्दगी को इस तरह जकड़ रखा है कि हम हलालो हराम, वाजिबात व मुहर्रमात की फ़िक्र से आज़ाद हो गये और बे मक़सद हत्ता कि बाज़ ग़ैर शरई रुसूम की अदायगी और तवह्हुमात को वाजिबाते ज़िन्दगी समझ लिया है और ज़िन्दगी के अहम तरीन उमूरो फ़राएज़ से ग़ाफ़िल हो गये।

यूँ तो ज़िन्दगी के कई रंग हैं शादी ब्याह, मौत व ग़मी जिनमें अइज़्ज़ा व अहबाब जमा होते हैं मौक़े की नौईय्यत के एतबार से कुछ ख़ास उमूर अन्जाम दिये जाते हैं ख़ुशी की तक़रीबात में इज़हारे मसर्रत के लिए थोड़ी बहुत हलकी फुलकी बे ज़रर रुसूम अन्जाम दे लेना अलग बात है क्योंकि ज़िन्दगी ज़िन्दःदिली का नाम है लेकिन रस्मो रवाज पर इस क़दर सख़्ती से कारबंद रहना कि हरामो हलाल का ख़याल न रहे और किसी रसम में ज़रा सी कमी व बेशी हो जाने से दिल तरह–तरह के वसवसों से भर जाये ये चीज़ उम्मते मुस्लेमः के शायाने शान नहीं है ख़ुशी की महफिल हो या ग़मों की तक़रीब मियानारवी इख़्तियार करना इस्लाम की नज़र में सबसे पसन्दीदः अम्र है। और हालात का तक़ाज़ा भी यही है ज़िन्दगी को आसान बनाना दानिश्मन्दी है न कि रस्मो रवाज में उलझ कर ज़िन्दगी को मुश्किल बना लिया जाये। मुस्लिम मआशरे पर नज़र डालिये तरह–तरह के ख़ुराफ़ात को अस्ल मज़हब समझ लिया गया है क़दम–क़दम पर हमारे यहाँ यह नहीं होता वह नहीं होता के चक्कर ने इन्सानी फ़िक्र को इतनी मामूली–मामूली बातों में उलझा कर रख दिया है।जबकि ख़ुदावन्दे आलम ने इन्सान को अक़्लो फ़हम व इदराक अता कर के तमाम मख़लूक़ात में सबसे अफ़ज़ल व बरतर बनाया है। अल्लामा इक़बाल ने क्या ख़ूब कहा है:

"तू शाहीं है परवाज़ है काम तेरा
तेरे सामने आसमाँ और भी हैं।"

लीजिए इज़दवाजी ज़िन्दगी की इब्तेदा हुई, ख़ुदावन्दे करीम ने औलाद की शक्ल में नेमत अता की। शुक्रे ख़ुदा के बजाए ग़ैर ज़रूरी रस्मों का सिलसिला शुरु हो गया। छटी, चिल्ला जैसी रस्मों को अन्जाम देना फ़र्ज़ समझ लिया गया और कहीं बेटी के यहाँ बच्चा पैदा हुआ तो उसके छटी चिल्ले की फ़िक्र ने रातों की नींद हराम कर दी क्योंकि समधियाने वालों पर रोब भी जमाना है और शानो शौकत का मुज़ाहरा भी करना है और अगर कहीं यह जज़्बा नहीं है तो ''इज़्ज़तो आबरू'' तो बचानी है। बच्चे के लिए कपड़ों खिलौनों और दीगर ज़रूरियात की लम्बी फ़ेहरिस्त तैयार है, दामाद बेटी के लिए ज़ेवर जोड़े भी ज़रूरी हैं, आप शर्मिन्दः परीशान कि

कहीं न कहीं से इन्तेज़ाम करना है ख़्वाह क़र्ज़ लेना पड़े या कोई सामान बेचना पड़े। लड़की अलग डरी सहमी, शर्मिन्दः–शर्मिन्दः सी ससुराल वालों के तानों के ख़ौफ़ से ज़र्द हुई जा रही है अभी बेचारी मौत व ज़ीस्त (ज़िन्दगी) की कशमकश से आज़ाद हुई है। कमज़ोर बीमार है ख़ौफ़ अलग खाये जा रहा है, माँ बाप न दे सके या कम क़ीमत सामान दिया तो सास नन्दों के अलावा हर आने जाने वालों की बातें अलग सुनना पड़ेंगी अगर ख़ुश क़िस्मती से लड़की से ससुराल वाले शरीफ़ और नेक हुए तो पड़ोसी मिलने जुलने वाले कुरेद–कुरेद कर पूछेंगे क्या–क्या सामान आया? फ़लाँ के मायके वाले बड़े दिलवाले हैं क्या शानदार छटी आयी थी लोग देखते रह गये अब झूट बोल–बोल कर उनका मुँह बन्द कीजिए। ऐसी ही बेजा रुसूम के सबब बेटी पैदा होती है तो लोगों के मुँह उतर जाते हैं हालाँकि हज़रत रसूले अकरम का इरशादे गेरामी है कि बेटी ''रहमत'' है।

किसी भी चीज़ को रस्म न बनाइये, जिससे आपको भी तकलीफ हो और दूसरों को भी।

ग़ालेबन सबसे ज़ियादा वक़्त और पैसे की बरबादी एक अहम शरई फ़रीज़ा ख़त्ने पर की जाती है धूम–धाम के चक्कर में बच्चा काफी बड़ा हो जाता है तब ख़त्ना कराया जाता है। हालाँकि तिब्बी नुक़्त–ए–नज़र से और तहज़ीब व शाइस्तगी का तक़ाज़ा भी यही है कि पैदाइश के बाद जितनी जल्दी हो सके इसे अन्जाम दिया जाए, बड़ा होने पर बच्चा शर्म महसूस करता है और तकलीफ़ भी ज़ियादा होती है। हफ़्ता दो हफ़्ता की उर्म में बच्चे की खाल नर्म होती है और जल्दी ठीक हो जाता है।

नौ साल की उम्र में लड़की पर नमाज़, रोज़ा वाजिब हो जाता है लेकिन यह वाजिब अम्र (काम) भी रस्मों की नज़्र हो जाता है जब तक धूमधाम से ''रोज़ा कुशाई'' करने का बन्दोबस्त न हो जाए, लड़की को रोज़ा नहीं रखवाया जाता और कई–कई साल इसी तरह टाल दिये जाते हैं। उमूमन लोगों ने यह समझ रखा है कि रोज़ा कुशाई के बग़ैर रोज़ा नहीं रखा जा सकता। दस, बारह, तेरह साल की लड़की से पूछिये बेटा रोज़ा रखती हो? जवाब देगी ''जी नहीं अभी रोज़ा कुशाई नहीं हुई है।''

अइज़्ज़ा व अहबाब को इज़्ज़तो एहतेराम से अपने घर मदऊ करना और रोज़ा इफ़्तार कराना मुस्तहब्बात में से है लेकिन एक फ़र्ज़ (वाजिब) पर मुस्तहब को तरजीह देना कहाँ की दानिश्मन्दी है। धूम–धाम से रोज़ा कुशाई करने में दूसरों की नज़र में अपने वक़ार को बढ़ाना और शान दिखाना मक़सूद हो तो (और साथ में यह बात भी ज़हन में गोशे में महफ़ूज़ रहे कि नेयोते के नाम पर मेहमानों से इतना मिल जायेगा कि सारा ख़र्चा निकल आयेगा) उस सवाब को कम कर देता है जो हमें रोज़ादार मेहमानों को खिलाकर हासिल हो सकता था। बल्कि हम इस तरह दूसरों की हौसला शिकनी करने के जुर्म के भी मुरतकब होते हैं कम हैसियत वाले लोग बरसों इसी फ़िक्र में बच्ची रोज़ा नहीं रखवाते कि कुछ इंतेज़ाम हो जाये तो रोज़ा कुशाई कराएँ ताकि ख़ानदान और मोहल्ले वालों की नज़र में कंजूस और मक्खीचूस न समझे जाएँ। नज़र में रोज़े की अहम्मीयत इतनी नहीं है जितनी रोज़ा कुशाई की, ख़्वाह क़र्ज़ लेना पड़े या बच्चों की ताअलीम रुक जाये रोज़ा

कुशाई के बाद भी कितने बच्चे रोज़ा रखते हैं यह सवाल भी ग़ौर तलब है।

और अगर आक़ेबत संवारना है तो इस मुबारक मौक़े पर जब आपकी लाडली बेटी इस्लामी कलेण्डर के हिसाब से जिस महीने में भी नौ साल की हो जाए या रजब या शाबान के मुक़द्दस महीने में अपनी हैसियत के मुताबिक़ एक हलकी फुलकी तक़रीब कर दीजिए, शानो शौकत के मुज़ाहरे और दूसरों की वाह–वाह की फ़िक्र ज़हन के किसी गोशे में हरगिज़ न रहे सिर्फ ख़ुदावन्दे आलम की ख़ुशनूदी का ख़याल रहे। अपने अज़ीज़ व अक़ारिब और बच्ची की चन्द सहेलियों के अलावह अगर उस तक़रीबे सईद में अपने कुछ ग़रीब व मिस्कीन मुसलमान भाई बहनों को भी अपने साथ दस्तरख़्वान पर बिठा लें तो उस तक़रीब और आपके दस्तरख़्वान की शान ही कुछ और होगी यक़ीनन मलायका भी दुरूद भेजेंगे। मुमकिन हो तो इस मौक़े पर एक मुख़्तसर तक़रीर का एहतेमाम कीजिए और अवाम को नमाज़, रोज़े, हिजाब और दूसरे वाजिबात की तरफ़ मुतवज्जेह कीजिए और बताइये कि बच्ची जिस वक़्त नौ साल की हो जाये तो उस पर तमाम शरई ज़िम्मेदारियाँ आयद हो जाती हैं और पहली रमज़ानुल मुबारक से रोज़ा रखवाइये। यह नहीं कि आधा रमज़ान गुज़ार के रोज़ा कुशाई की और बिला वजह इतने वाजिब रोज़े क़ज़ा करवा दिये। इस तरह की तक़रीरें दूसरों की हौसला अफ़ज़ाई का बायस बनती हैं और आपको भी इसका सवाब मिलेगा।

ख़ुदा के फ़ज़्लो करम से बच्चे बड़े हुए इनकी शादी के मुक़द्दस फ़रीज़े से सुबुकदोश होने का मौक़ा आया शादी तै होते ही जैसे और वक़्त की बर्बादी का सिलसिला शुरु हो गया तारीख़ तै करने के लिए दोनो तरफ़ इन्तेज़ामात शुरु हो गये, पैसे की तंगी आड़े आ रही है लेकिन लड़की वालों की सुबकी न हो जाए या लड़के वालों की तरफ से कोई कमी न रह जाए कि इज़्ज़त को बट्टा लग जाए! ख़्वाह क़र्ज़ लेना पड़े लेकिन सब मरासिम अन्जाम देना ज़रूरी हैं। हालाँकि सादगी के साथ दोनों तरफ़ के चन्द बुजुर्ग बैठकर तारीख़ और दूसरे उमूर तै कर सकते हैं अगर अलग–अलग शहरों में हैं तो खुतूत के ज़रिये सब बातें तै हो सकती हैं। शादी के हफ़्तों मे पहले मुख़्तलिफ़ मरासिम शुरु हो जाते हैं। और मेहमानों की आमद और ख़ातिर तवाज़ो में वक़्त और पैसा बर्बाद होता है। बारात चली तो काफ़ी हंगामा, बाज़ ख़ानदानों में बारात के साथ ढोल, ताशे, शहनाई ना हो तो गोया वह बारात ही नहीं। अपना रोब जमाने के लिए बरी ले जाना और दिखाना ज़रूरी है। पैसा नहीं तो क्या हुआ कुछ क़र्ज़ लेकर जोड़े बनाये, कुछ दूसरों के जोड़े माँग कर लगा दिये। बरी में शकर मेवे तो ख़ैर काम की चीज़ हैं मगर बरी का एक बहुत ही अहम जुज़ ''सुहाग पूड़ा'' का मसरफ़ आज तक समझ में न आया। न जाने इसमें क्या–क्या अला बला भरा होता है फिर मिट्टी की एक हंडिया में ज़रा सा दही और उसके मुँह पर मछलियाँ बाँधकर ले जाना, वाजिबात में शामिल है। क्या आपने ग़ौर किया है कि यह बेजान मछलियाँ भला हमारी क़िस्मत में क्या इन्केलाब ला सकती हैं।

धूम–धूम से बाराती दुलहन के घर पहुँचे वहाँ भी अजीबो ग़रीब मन्ज़र है। एक बड़े से

कमरे में नुमाइश लगी है, कुछ अलगनियाँ बंधी हैं जिन पर अलग–अलग जोड़े लटक रहे हैं। ग़रारे सूट, शलवार सूट, साडियाँ, शालें, चादरे, पलंगपोश, एक तरफ़ बरतनों की क़तार है। ग़रज़ कि एक माहिर दुकानदार की तरह जहेज़ की हर छोटी बड़ी चीज़ को निहायत नुमायाँ तरीक़े से रखा गया है। मेहमानों को निहायत फ़खर व शान के साथ एक–एक चीज़ दिखायी जाती है। बारात के आने के बाद दुल्हा वाले एक–एक चीज़ को ग़ौर से देखते और परखते हैं। और दी हुई लिस्ट से मिलाते हैं। और वापसी के वक़्त ऐसे सामान उठाते हैं जैसे लूट का माल ले जा रहे हों कई ऐसी ग़ैर ज़रूरी चीज़ें जिनका आज कल की ज़िन्दगी में कोई इस्तेमाल नहीं, जहेज़ का लाज़मा क़रार दी जाती हैं जो सरासर इसराफ़ है बरी और जहेज़ की नुमाइश एक निहायत ना पसन्दीदा फ़ेल है। जो नहीं दे सकते उनकी दिल आज़ारी होती है। जहेज़ की लालच के सबब कितनी हुनरमन्द और तअलीम याफ़्ता लड़कियाँ कुँवारी रह जाती हैं या उनके हस्बे हैसियत लड़के नहीं मिलते।

बाज़ मक़ामात पर एक अजीब सी रस्म है कि बारात के आते ही निकाह से पहले ही दूल्हा को मकान के दरवाज़े पर या अन्दर बुलाया जाता है। और दुल्हन की बहनें, सहेलियाँ और दूसरी रिश्तेदार ख़वातीन फूलों की छड़ियों से उसकी तवाज़ो और हंसी मज़ाक़ करती हैं। ज़रा ग़ौर कीजिए दूसरी ख़वातीन तो हमेशा ही ना महरम रहेंगी लेकिन अभी तो दुल्हन की माँ तक जो निकाह के बाद दुल्हा की हक़ीक़ी माँ जैसा मरतबा पायेंगी, नामहरम हैं। यह ग़ैर शरई रस्म कैसे शुरु हुई और क्या इसको ख़त्म करना ज़रूरी नहीं है??? निकाह के बाद दूल्हा सलाम कराई के लिए अन्दर आता है उस वक़्त बेज़रर हलकी फुल्की रस्में अन्जाम दे लें तो कोई क़बाहत नहीं मसलन आरसी मुसहफ़ जिसमें दूल्हा दुल्हन सूर–ए–एख़लास की तिलावत के बाद आईने में एक दूसरे का चेहरा देखते हैं, बाज़ ख़ानदानों में इस मौक़े पर तरह–तरह की बेहूदा रस्में शुरु हो जाती हैं। दूल्हा के साथ–साथ उसके दोस्तों और रिश्तेदारों की जवान टोलियाँ भी अन्दर आ जाती हैं। यही मौक़ा होता है..... .... उधर लड़कियाँ भी ज़र्क़–बर्क़ कील काँटे से लैस...................तीर चलाने को बिलकुल तैयार बैठी हैं। नज़र के साथ–साथ ज़बान के वार भी जारी हैं। रस्में शुरु होती हैं जिनका अक्सर तूफ़ानी सिलसिला चलता है। शोर बुलन्द हुआ .... संदल कहाँ है? अगर बरी के साथ संदल नहीं आया तो बदशुगूनी शुरु होगी, दिल लरज़ने लगा .... संदल मिल गया तो दुल्हन की माँग भरने के लिए दूल्हा के बड़े भाई को बुलाया जा रहा है। लीजिये दुल्हन का दीदार सबसे पहले जेठ साहब करेंगे। जो हमेशा ही ना महरम रहेंगे। माँग भरने या ना भरने से सुहाग क़ायम रहने की गारंटी नहीं हो जाती बहर हाल माहोल में ख़ुशी व मसर्ररत का रंग बिखेरने के लिए यह रस्म ज़रूर कीजिए मगर यह रस्म शौहर के हाथों अन्जाम पाये ना महरम के हाथों नहीं।

ख़ुदा–ख़ुदा करके दुल्हन रुख़सत हुई तो चौथी चाले शुरु हो गये। चौथी में वह तूफ़ान बदतमीज़ी कि अलअमान। दोनों तरफ़ के लड़के लड़कियो के हंसी मज़ाक़ करने का मौक़ा बुज़ुर्गों

ने फ़राहम कर दिया, सब्ज़ियों, फ़लों और अण्डों की बर्बादी न पूछिये। क़ौम के कितने अफ़राद दाने–दाने को तरस रहे हैं और शादी ख़ाना आबादी जैसे मुबारक मौक़े पर ख़ुदा की अता की हुई नेमतों और ग़िज़ाओं को हम इस तरह तबाह करने पर तुले हुए हैं।

एक रस्म जो बहुत आम है वह दुल्हन की गोद भरने की है, रुख़सती के वक़्त दुल्हन के दुपट्टे के चारों कोनों में शुगून के लिए कुछ चीज़ें बाँध दी जाती हैं। शादी के बाद लड़की, मैके या ससुराल के किसी अज़ीज़ या जानने वाले के घर जाती है तो उसकी गोद भरना ज़रूरी होता है। आँचल में चावल, माश, शकर, पान का पत्ता और रुपये डाले जाते हैं। अगर कहीं भूल चूक हो गयी तो दिल अन्देशों से भरा जाता है कि कहीं दुल्हन बे औलाद न रह जाये, ज़रा इस रस्म पर भी ग़ौर कीजिए क्या वह सब दुल्हनें जिनकी गोद भरी जाती है रही है उनमें कोई ऐसी नहीं जो औलाद से महरूम रह गयी हो और क्या जिनके यहाँ यह रस्म नहीं मानी जाती, ख़ुदावन्दे आलम ने उनको औलाद की नेमत से मालामाल नहीं किया है?

रस्में हमारी ज़िन्दगी में परेशानियाँ पैदा कर देती हैं, हमारे दुखों और महरूमियों का इलाज नहीं कर सकती। नेमतें अता करने वाला ख़ुदावन्दे रहीमो करीम है। क़ुर्आने करीम में सूर–ए–शोअरा (42) की आयत 59–60 पर नज़र डालिये, परवरदिगार क्या फरमाता है। .... ''अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है और जिसे चाहता है फ़क़त बेटियाँ देता है और जिसे चाहता है सिर्फ बेटे अता करता है या उनको बेटे बेटियाँ दोनों इनायत करता है और जिसको चाहता है बाँझ बना देता है।''

ज़रा ग़ौर कीजिये हम उस नबी–ए–आख़ेरुज़्ज़माँ (आख़री नबी) के मानने वाले हैं जिसको ख़ुदा ने रहमतुल लिलआलमीन बनाकर हमारी हिदायत व रहनुमाई के लिए भेजा, जिसने दुनिया को जिहालत व तारीकी से निकालकर इल्मो अमल की रौशनी अता की और हम फ़ुज़ूल रुसूम और बेजा तवह्हुमात का इस तरह शिकार हैं कि मामूली–मामूली बातों में कमी व बेशी पर बदशुगूनी का ख़ौफ़ सताने लगता है। शादी के बाद एक साल के अन्दर ख़ानदान में कोई हादसा या मौत या नुक़सान हो गया तो दुल्हन को मन्हूस या सब्ज़क़दम कहकर उसकी ज़िन्दगी अजीरन कर दी जाती है। बल्कि बाज़ औक़ात तो दुल्हन को हमेशा के लिए मायके भेज दिया जाता है या तलाक़ दे दी जाती है।

शादी ख़ाना आबादी जैसे मुबारक मौक़े पर जब दो अजनबी ज़िन्दगी भर के लिए रिश्त–ए–इज़देवाज में मुनसलिक हो रहे हों हमें यह फ़िक्र नहीं रहती कि कहीं ऐसा कोई अमल सरज़द न हो जाए जो ख़ुदा और रसूल की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हो और उसका एताब नाज़िल हो जाए, हाँ डर लगता है तो इससे कि फ़लाँ की शादी में यह रस्म हुई थी या यह रस्म रह गयी थी तो यह शादी कामयाब नहीं हुई या ख़ानदान में कोई ग़मी हो गयी, निकाह के वक़्त दुल्हन की नाक में नथ पड़ना ज़रूरी है वरना बदशुगूनी हो जायेगी बल्कि बाज़ ख़ानदानों में तो नाक में नथ नहीं पड़ी तो निकाह ही जाएज़ नहीं हुआ क्या यह सब सही है?

आपने निकाह का नथ से किस तरह तअल्लुक़ जोड़ लिया, मज़हब की अस्ल रूह को

पहचानिये मफ़रूज़ा तवह्हुमात और मुरव्वजा ग़लत रुसूम से इजतेनाब कीजिये। बाज़ ख़ानदानों में साल के कुछ महीनों को ही मनहूस क़रार दे दिया जाता है। फ़लाँ महीने में शादी हुई थे तो ख़ानदान में मौत हो गयी लेहाज़ा इस महीने में तो हमारे ख़ानदान में शादी नहीं की जाती, दूल्हा मुल्क के बाहर सरविस करता हो उसे जल्दी वापस जाना हो ख़्वाह शादी ही रुक जाए मगर इस महीने में शादी नहीं हो सकती, कमाले तअज्जुब तो यह है कि बाज़ ख़ानदानों में रजब और शअबान जैसे मुक़द्दस व मोहतरम महीनों में शादी से गुरेज़ किया जाता है। और इसी तरह का वहम किया जाता है, हालाँकि इन दोनों महीनों की फ़ज़ीलत के लिए बहुत सी रिवायतें मिलती हैं।

हज़रत रसूल अकरम (स0) का इरशाद है कि माहे रजब ख़ुदा का महीना है और इसकी हुरमत व फ़ज़ीलत तमाम दूसरे महीनों से बेहतर है और शअबान मेरा महीना है लेहाज़ा जिन महीनों को ख़ुदा ने अपने और अपने हबीब से ख़ास तौर पर मन्सूब किया हो उसकी बरकत व फ़ज़ीलत का क्या कहना इसी तरह हफ़्ते के कुछ दिन मुअय्यन कर लिए गये हैं जिनमें किसी के घर ताज़ियत अदा करने नहीं जा सकते।

शादी, ख़त्ना, अक़ीक़ा और सालगिरह वगैरा पर बहुत धूम–धाम करके ख़ुश होना कि दूसरे लोग तारीफ़ करेंगे और बरसों याद रखेंगे या इस पर फख़्र करना कि जैसा शानदार इन्तेज़ाम और एहतेमाम हमने किया था हमारे यहाँ कोई दूसरा नहीं कर सकता, यह सब फ़ख़्र व मुबाहात क्या सरकारे दो आलम की उम्मत को ज़ेब देते हैं। जिसने अपनी चहीती बेटी की शादी किस सादगी से की थी ताकि हमारे लिए नमून–ए–अमल क़ायम हो इन तक़रीबात पर रुपये पैसे और वक़्त की बर्बादी करके हम अपने मआशरे को किस सिम्त लिए जा रहे हैं।

हमें ख़ुदा व रसूल की ख़ुशी मद्देनज़र रखनी चाहिए या अइज़्ज़ा व अहबाब की?

बेजा शानो शौकत के मुज़ाहरे और फ़ुज़ूल रुसूम की अदायगी के बजाय अगर हम अपने बच्चों की तालीम व तरबियत पर तवज्जो दें तो एक सेहतमन्द इस्लामी मआशरे की तश्कील हो सकती है जहाँ एक–एक तक़रीब पर बहुत ज़ियादा वक़्त और पैसा सर्फ़ किया जाता है वहाँ वालदैन बच्चों की सही तालीम व तरबियत कर ही नहीं सकते।

तवह्हुमात को दिल में जगह न दीजिए, रुसूम के गुलाम न बनिये। शादी ब्याह को आसान बनाइये, छोटी–मोटी तक़रीब ज़रूर कीजिए मगर इसमें भी तअमीरी और इस्लाही पहलू नुमायाँ रहे। शरई अहकाम और सादगी को पेशे नज़र रखिये और ऐसे मौक़ों पर अपने मुस्तहेक़ भाई–बहनों को ज़रूर याद रखिये।

शादी, अक़ीक़ा और रोज़ा कुशाई वग़ैरा की तक़ारीब में मुख़्तसर तक़रीर का एहतेमाम ज़रूर कीजिये जिसमें सेहतमन्द मआशरे की तश्कील, मुरव्वजा (राएज) ग़लत रुसूम की मज़म्मत और उसके ग़लत नताएज और शरई एतबार से उसकी अहम्मियत पर ज़ोर दिया जाए, फ़राएज़ की अदायगी और वाजिबात व मुस्तहेब्बात पर अमल करने नीज़ मुहर्रमात व मकरूहात से इजतेनाब करने, नेकी इख़्तियार करने और बुराइयों से बचने पर मुतवज्जेह किया जाता रहे। □□□

इदारा

मुख्य समाचार

जलजला : पाकिस्तान व शिमाली हिन्द में अलमनाक हादसा

मलबे के अन्दर से बुलन्द हुई अल्लाहु अकबर की सदा, फ़ौज लड़ सकती है ऐसी तबाही का समाना नहीं कर सकती

इस्लामाबाद। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की रियासत जम्मू व कश्मीर में 7.4 शिद्दत के ज़लज़ले में हज़ारों की तादाद में लोग हलाक हुए जबकि बचाव कारकुन गिरी हुई इमारतों और स्कूलों के मलबे से ज़िन्दा बच जाने वालों की तलाश में वक़्त की तंगी से लड़ रहे हैं। मलबे के अन्दर से अल्लाहु अकबर की आवाज़ें आ रही हैं जहाँ अभी तक ज़िन्दगी की कोई अलामत मौजूद नहीं थी और बिर्टेन के जासूस कुत्तों ने भी जवाब दे दिया। इस्लामाबाद के मरगला टावर के मलबों को आवाज़ के बाद भारी मशीनों से हटाने का काम फौरन बन्द कर दिया गया। पाकिस्तानी फ़ौज और बिर्टेनी टीम यहाँ बचाव के काम की निगरानी कर रही थी इसके बाद उन आलात को इस्तेमाल किया गया जिनसे अन्दाज़ा होता है कि आवाज़ कहाँ से आ रही है। मलबे में दबे बीसियों लोगों में से उस शख़्स ने ग़ालिबन महसूस कर लिया था कि वह बच सकता है। अल्लाहु अकबर के साथ यह अल्फ़ाज़ भी सुने गये, "अगर कोई मेरी आवाज़ सुन रहा है तो मुझे बचा ले" आवाज़ बार–बार आ रही थी और इतनी बुलन्द थी कि मुहाज़रे से बाहर खड़े लोग सुन सकते थे। बचाव कारों का ख़याल है कि मरगला टावर में लापता लोगों की तादाद अन्दाज़े से कहीं ज़ियादा हो सकती है।

ज़लज़ले से मुतास्सिर लोगों के लिए नूरे हिदायत फाउण्डेशन की जानिब से एक दुआइया जलसे का एहतेमाम किया गया। इस जलसे में हिन्द व पाक में आए हुए हौलनाक ज़लज़ले से मुतास्सिरीन के लिए दुआ की गयी और उनसे हमदर्दी का इज़हार किया गया। जलसे के आख़िर में मरहूमीन के लिए फातेहा ख़वानी की गयी है।

शीआ सेण्ट्रल वक्फ़ बोर्ड की करोड़ों की इमलाक बचाने के लिए

मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब की तहरीक पर ज़िला हुक्काम हरकत में

लखनऊ। क़ाएदे मिल्लते जाफ़रिया मौलाना सै0 कल्बे जवाद नक़वी साहब क़िब्ला इमामे जुमा, लखनऊ की तहरीक पर राजधानी के ताल कटोरा थाना हलक़े में वाक़ेअ शीआ सेण्ट्रल वक़्फ़ बोर्ड की करोड़ों की इमलाक को मौलाना मौसूफ़ की तहरीर के बाद, एस0एस0पी0 आशुतोश पाण्डेय ने ज़मीन माफ़िया लल्लू यादव के ख़िलाफ़ मुक़द्दमा दर्ज करते हुए इस ज़मीन पर एक प्लाटून आर0ए0एफ0 और एक प्लाटून पी0ए0सी0 लगाकर ख़ाली करायी है। एक प्लाटून पी0ए0सी0 वहाँ पर मौजूद है।

एस0एस0पी0 आशुतोश पाण्डेय ने बताया कि शीआ आलिमे दीन मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद ने एक तहरीर देते हुए बताया कि ताल कटोरा थाना हलक़े में वाक़ेअ शीआ सेण्ट्रल वक़्फ़ बोर्ड की ज़मीन वक़्फ़ सज्जादिया जिसकी बीस बीघा ज़मीन जिसकी क़ीमत तक़रीबन पाँच करोड़ रुपये है, पर ज़मीन माफ़िया लल्लू यादव ने क़ब्ज़ा कर लिया और वहाँ पर उसके गुर्गे असलहों से लैस मौजूद रहते हैं। इस तहरीर पर एस0एस0पी0 आशूतोश पाण्डेय ने हलक़े के लेखपाल वग़ैरा से जाँच करवाई। जाँच में पाया गया कि यह ज़मीन वक़्फ़ बोर्ड की है जिस पर लल्लू यादव और उसके गुर्गों ने क़ब्ज़ा कर लिया है। एस0एस0पी0 ने एल0आई0यू0 को भी रिपोर्ट की थी जिसके बाद एस0एस0पी0 ने हुक्म जारी करके लल्लू यादव के ख़िलाफ़ ताल कटोरा थाने में रिपोर्ट दर्ज करवायी, जिसके बाद एस0एस0पी0 के हुक्म पर इसी लगाये गये कटीले तार वग़ैरा को हटाने के लिए एक प्लाटून आर0ए0एफ0 भेजी गयी है और ज़मीन पर लगे कटीले तार हटाये जा रहे हैं।

एस0एस0पी0 ने बताया कि फ़िलहाल इस ज़मीन पर एक प्लाटून पी0ए0सी0 कैम्प कर रही है। तालकटोरा थाने की पुलिस व सी0ओ0 बाज़ार खाला श्याम जी त्रिपाठी भी इसी ज़मीन को ख़ाली कराने गये थे जिस पर लल्लू यादव क़ब्ज़ा करना चाह रहा था और अब उसके पैर उखड़ गये हैं।

यह बात मालूम हो कि वक़्फ़ सज्जादिया के मुतवल्ली मौलाना सै0 कल्बे जवाद साहब हैं। मौलाना मौसूफ़ ने इस बड़ी कामयाबी पर ख़ुदा का शुक्र अदा किया और एस0एस0पी0 आशुतोश पाण्डेय का भी शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने क़ौम की बात को सुना और उस पर अमल किया। मौलाना मौसूफ़ ने कहा कि मेरी ख़्वाहिश है कि ज़मीन पर ग़रीब व बेघर लोगों को बसाया जाए।

अहले सुन्नत उलमा की अक्सरियत तीन तलाक़ को तस्लीम नहीं करती

मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के नाएब सद्र मौलाना डाक्टर सैय्यद कल्बे सादिक़ साहब का इज़हारे ख़याल

लखनऊ। अहले सुन्नत उलमा की एक बड़ी जमाअत तीन तलाक़ के मसले पर शीआ उलमा के साथ है और वह एक साथ दिये गये तीन तलाक़ को तसलीम नहीं करती। इन ख़यालात का इज़हार आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के नाएब सद्र मौलाना डाक्टर कल्बे सादिक़ साहब ने किया।

उन्होंने बताया कि इस्लाम में दो बड़े फ़िरक़े हैं एक सुन्नी और दूसरा शीआ। तीन तलाक़ का मसला शीआ फ़िरक़े में क़ुर्आन और हदीस के ख़िलाफ़ समझा जाता है। सुन्नियों में ऐसे आलिम मौजूद हैं जो इस बारे में वही कहते हैं जो शीआ उलमा कहते हैं।

डाक्टर कल्बे सादिक़ साहब ने कहा कि मैं अंग्रेज़ी और अरबी किताबों का हवाला नहीं देता लेकिन मिसाल के लिए आलमी शोहरत याफ़्ता सुन्नी स्कालर मौलाना वहीद उद्दीन ख़ाँ की किताब ''मज़ामीने इस्लाम'' का हवाला देता हूँ। इस किताब के पेज 110 से 116 तक तलाक़ के बारे में तफ़सील से लिखा है। डाक्टर कल्बे सादिक़ साहब ने कहा कि मैं सुन्नी उलमा से दरख़ास्त करूँगा कि वह सूरते हाल के पेशे नज़र इस मसले का हल निकालें। उन्होंने कहा कि इस्लाम की बुनियाद समाजी इन्साफ़ है।

डाक्टर कल्बे सादिक़ साहब ने मीडिया से भी अपील की कि वह इमराना, गुड़िया और सानिया मिर्ज़ा जैसे मसाएल को बढ़ा–चढ़ा कर न पेश करे। उन्होंने मीडिया को मशोरा दिया कि वह मुस्लिम समाज में फैली निरक्षरता और ग़रीबी को अहम इशु बनाये।

ईरान इतना मज़बूत है कि मआशी पाबन्दी बर्दाश्त कर सकता है

न्यूकिलियाई प्रोग्राम पर एक आलिमे दीन का बयान

तेहरान। ऐवान के एक सीनियर आलिमे दीन ने कहा कि ईरान इतना मज़बूत है कि अगर उसके ख़िलाफ़ न्युकिलियाई प्रोग्राम की सिलसिले में पाबन्दियाँ लगायी गयीं तो वह उन्हें बर्दाश्त कर लेगा। उन्होंने कहा कि मुल्क के लाखों लोग ईरान के पुर अमन न्युकिलियाई प्रोग्राम की हिमायत में उठ खड़े हुए हैं।

इसी दौरान इण्टर नेश्नल एटामिक एनर्जी एजेन्सी के सरबराह मुहम्मद अलबरदानी को जो अमन का नोबेल इनाम दिया गया है उसके बारे में ईरानी हुक्काम ने कुछ कहने से इन्कार कर दिया है लेकिन हुकूमत के एक क़रीबी ज़राए का कहना है कि यह एक सियासी फैसला है जिसका निशाना ईरान बनेगा।

ताक़तवर गार्जेन कोन्सल के सरबराह आयतुल्लाह अहमद जन्नती ने कहा कि ईरान मग़रिबी मुल्कों के दबाव में नहीं आयेगा। जुमा के रोज़ वस्ती तेहरान के चौक में हज़ारों लोगों ने मुज़ाहेरा किया। वह नारे लगा रहे थे कि एटमी ताक़त हासिल करना हमारा हक़ है। मर्ग बर अमरीका मर्ग बर इसराईल। यह लोग पीले कार्ड उठाये हुए थे जिन पर लिखा कि ईरान किसी की धौंस में नहीं आयेगा और हम अपनी जाने क़ुर्बान करने के लिये तैयार हैं।

आज इस्लाम का सबसे बड़ा दुश्मन अमरीका : मौलाना कल्बे जवाद साहब

बाराबंकी। आलमी शोहरत याफ्ता आलिमे दीन मौलाना सैय्यद कल्बे जवाद नक़वी साहब ने कहा कि इस्लाम का सबसे बड़ा दुश्मन अमरीका है इसलिए आलमे इस्लाम को अमरीका की बुरी नज़र से बचाना हम सबका पहला फ़र्ज़ है। उन्होंने वज़ीरे आज़म डाक्टर मनमोहन सिंह को आगाह करते हुए कहा कि उन्हें अमरीका के साथ दोस्ती का हाथ मिलाने से पहले इस बात पर ग़ौर करना चाहिए कि इसके पीछे क्या है? अमरीका ने सद्दाम हुसैन और अलक़ाएदा से भी दोस्ती की थी। उन्होंने कहा कि हिन्दुस्तान को उससे दोस्ती करनी चाहिए जो सच्ची दोस्ती का मतलब समझता हो। मौलाना कल्बे जवाद साहब अन्जुम गुन्च–ए–अब्बासिया के ज़ेरे एहतेमाम मक़ामी करबला सिविल लाइंस में शहंशाहे वफ़ा हज़रत अब्बास की चौदह सौ साला यौमे विलादत की तक़रीब के सिलसिले में एक महफ़िले नूर को ख़िताब कर रहे थे। मौलाना मौसूफ़ ने कहा हज़रत अब्बास की ज़िन्दगी के कुछ पहलुओं पर रोशनी डालते हुए आगे कहा बहादुरी की दो क़िस्में हैं एक कुव्वते बाज़ू और दूसरी कुव्वते बर्दाश्त। दूसरी क़िस्म ज़ियादा बुलन्द होती है। और हज़रत अब्बास ने कर्बला में बहादुरी की दूसरी क़िस्म का ही मुज़ाहेरा किया। महफ़िल मौलाना अयाज़ हैदर की तिलावते क़ुर्आन पाक से शुरु हुई और इफ़्तेताह मौलाना वसी हसन ख़ाँ साहब ने किया और निज़ामत के फ़राएज़ सहर अरशी जौनपुरी ने अन्जाम दिये।